IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

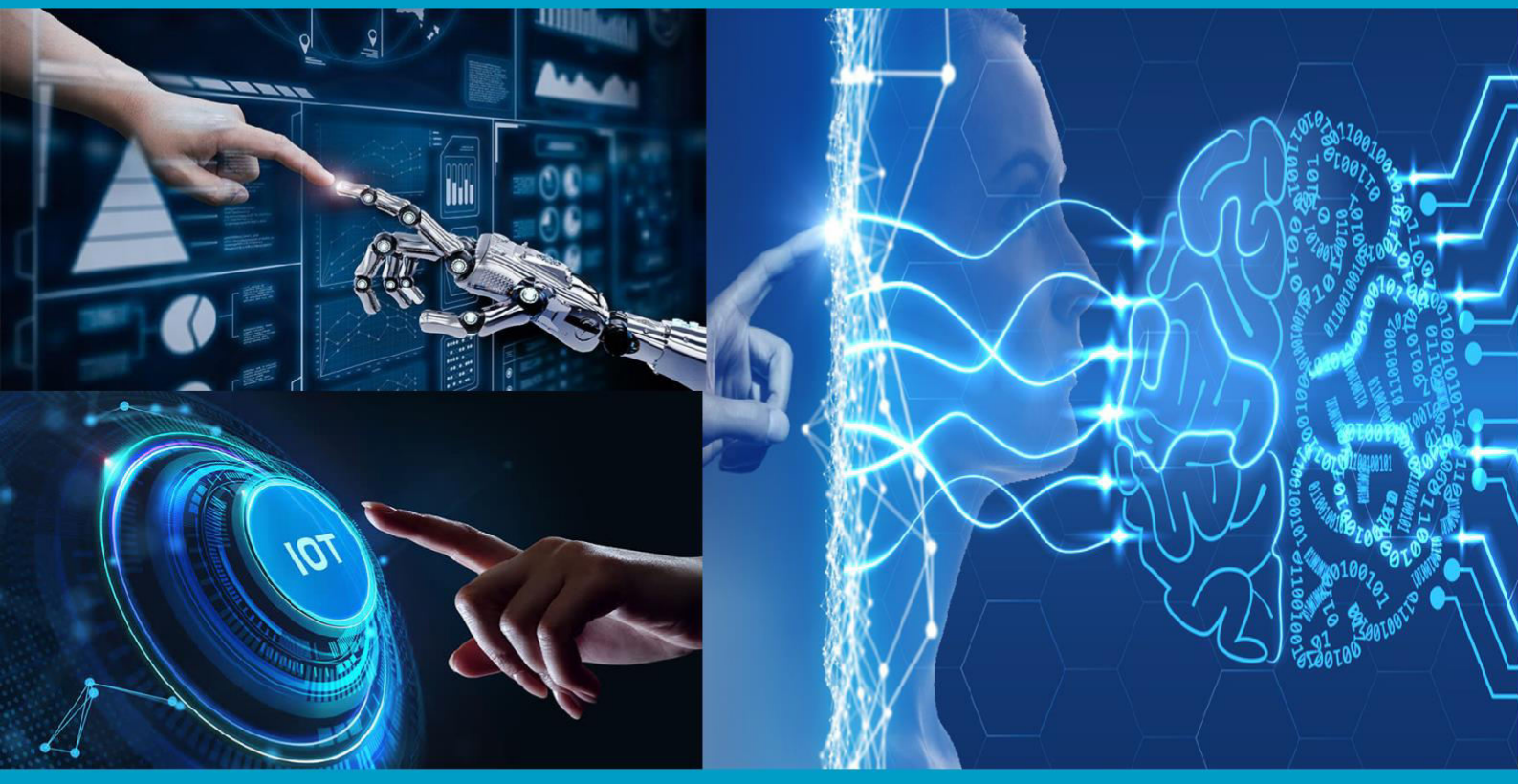

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 10, Issue 6, June 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

राजस्थान में जैन धर्म के प्रमुख तीर्थस्थल और उनका प्रभाव

Pukhraj

Assistant Professor, Department of History, Govt. College, Pipar City, Jodhpur, Rajasthan,India

सार

जैन मंदिर कई निर्माण शैली में बनाए जाते हैं।

उत्तर भारत के जैन मंदिर दक्षिण भारत के जैन मंदिरों से काफ़ी भिन्न होते हैं। जैन मंदिर दो प्रकार के होते हैं :

- शिखर बंद जैन मंदिर
- घर जैन मंदिर (बिना शिखर वाले)

मंदिर का मुख्य भाग '''गर्भ ग्रह''' कहलाता है। यहाँ भगवान की प्रतिमा स्थापित की जाती है। इसमें बिना नहाये और पूजा के वस्त्रों के बिना नहीं जाना चाहिए।

१०० से अधिक वर्ष पुराना मंदिर तीर्थ कहलाता है। मुख्य वेदी पर विराजमान भगवान मंदिर के मूलनायक कहलाते है। जैन समाज में ऐसे कई मंदिर हैं जहां मूर्ति के स्थान पर जिनवाणी रखी होती हैं।ऐसे मंदिरों को चैत्यालयों कहते हैं इनमें दिगंबर जैन तारण पंथी पूजा करने जाते हैं।यह बुंदेलखंड में अधिक पाये जाते हैं।

परिचय

दिलवाड़ा मंदिर या देलवाडा मंदिर, पाँच मंदिरों का एक समूह है। ये राजस्थान के सिरोही जिले के माउंट आबू नगर में स्थित हैं। इन मंदिरों का निर्माण ग्यारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के बीच हुआ था।[1][2] यह शानदार मंदिर जैन धर्म के तीर्थंकरों को समर्पित हैं। दिलवाड़ा के मंदिरों में 'विमलशाही मंदिर' प्रथम तीर्थंकर को समर्पित सर्वाधिक प्राचीन है जो 1031 ई. में बना था। बाईसवें तीर्थंकर नेमीनाथ को समर्पित 'लुन वासाही मंदिर' भी काफी लोकप्रिय है। यह मंदिर 1231 ई. में वास्तुपाल और तेजपाल नामक दो भाईयों द्वारा बनवाया गया था। दिलवाड़ा जैन मंदिर परिसर में पांचवा मंदिर संगमरमर का है। मंदिरों के लगभग 48 स्तम्भों में नृत्यांगनाओं की आकृतियां बनी हुई हैं। दिलवाड़ा के मंदिर और मूर्तियां मंदिर निर्माण कला का उत्तम उदाहरण हैं।[1,2,3]

देलवाड़ा मंदिर का इतिहास

इन मंदिरों का निर्माण ग्यारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के दौरान राजा वास्तुपाल तथा तेजपाल नामक दो भाइयों ने करवाया था। दिलवाड़ा के मंदिरों में 'विमलशाही मंदिर' प्रथम तीर्थंकर को समर्पित सर्वाधिक प्राचीन है जो 1031 ई. में बना था।

बाईसवें तीर्थंकर नेमीनाथ को समर्पित 'लुन वासाही मंदिर' भी काफी लोकप्रिय है। इन मंदिरों की अद्भुत कारीगरी देखने योग्य है। अपने ऐतिहासिक महत्व एवं संगमरमर पत्थरों पर बारीक़ नक्काशी की जादूगरी के लिए पहचाने जाने वाले राज्य के सिरोही जिले के इन विश्वविख्यात मंदिरों में शिल्प-सौन्दर्य का ऐसा बेजोड़ खजाना है जिसे दुनिया में और कहीं नहीं देखा जा सकता।

इस मंदिर में आदिनाथ की मूर्ति की आंखें असली हीरे की बनी है तथा इनके गले में बहुमूल्य रत्नों का हार है। इन मंदिरों में तीर्थंकर के साथ साथ हिंदू देवी देवताओं की प्रतिमाएं भी स्थापित की गई हैं। मंदिरों का एक उत्कृष्ट प्रवेश द्वार है। यहां वास्तुकला की सादगी है जो जैन मूल्यों जैसे ईमानदारी और मितव्ययिता को दर्शाती है।[7,8,9]

[[]] विमलशाही मंदिर

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

सफेद संगमरमर से पूर्ण रूप से तराशा गया यह मंदिर गुजरात के चौलुक्य राजा भीम प्रथम के मंत्री विमल शाह द्वारा 1031 ई में बनाया गया था। यह मंदिर जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है। यह मंदिर एक गलियारे से घिरे हुए खुले आंगन में स्थित है जिसमें तीर्थंकरों की छोटी-छोटी मूर्तियां हैं।

समृद्ध पच्चीकारी वाले गलियारे, खंभे, मेहराबों, और मंदप या मंदिर के पोर्टिकों को यहां आश्चर्यजनक रूप से देखा जा सकता है। छतों पर कमल कलियों, पंखुड़िकाओं, फूलों और जैन पुराणों के दृश्यों की नक्काशियां उत्कीर्ण होती हैं। गुडा मंडप, मन्दिर का एक मुख्य आकर्षण है जिसमे श्री आदिनाथ की कई छवियाँ उकेरी गई है।

लूना वसाही मंदिर

लूना वसीह मंदिर भगवान नेमीनाथ को समर्पित है। इस भव्य मंदिर का निर्माण 1230 में दो पोरवाड़ भाइयों, वस्तुपाल और तेजपाल ने किया था, जो गुजरात के वाहेला के शासक थे। विमल वसीह मंदिर के बाद उनके दिवंगत भाई लूना के स्मरण में इस मंदिर का निर्माण किया गया।

मन्दिर के मुख्य हॉल, जिसे रंग मंडप कहा जाता है, में 360 छोटे छोटे तीर्थंकरो की मूर्तियों के लिए जाना जाता है। इस मन्दिर के हथिशाला या हाथी कक्ष की विशेषता 10 सुंदर संगमरमर के हाथियों पर बड़ी बारीकी से पालिश करके उन्हें वास्तविक रूप में दिया गया है।

गुडा मंडप में 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ की काली संगमरमर की मूर्ति है। मंदिर के बाईं ओर एक बड़ा काला कीर्थी स्तंभ स्थित है जिसे मेवाड़ के महाराणा कुंभ ने बनवाया था।[2,3]

पित्तलहार मंदिर

यह मंदिर अहमदाबाद के सुल्तान दादा के मंत्री भीम शाह ने बनवाया था। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) की विशाल धातु प्रतिमा जो पांच धातुओं में ढाली गयी है, को मंदिर में स्थापित किया गया है।

इस प्रतिमा के निर्माण में मूल धातुओं का प्रयोग किया गया है, अत: इसका नाम पित्तलहार है। इस मंदिर में मुख्य गर्भगृह, गुड मंडप और नवचौक है। मन्दिर में स्थित शिलालेख के अनुसार 1468-69 ईस्वी में 108 मूडों (चार मेट्रिक टन) वजनी मूर्ति प्रतिष्ठित की गई थी।

श्री पार्श्वनाथ मंदिर

भगवान पार्श्वनाथ को समर्पित यह मंदिर मांडलिक तथा उसके परिवार द्वारा 1458-59 में बनाया गया था। भगवान पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर थे। यह एक तीन मंजिला इमारत हैं, जो दिलवाड़ा के सभी मंदिरों में सबसे ऊंची है।

गर्भगृह के चारों मुखों पर भूतल पर चार विशाल मंडप हैं। मंदिर की बाहरी दीवारों पर ग्रे बलुआ पत्थर में सुंदर शिल्पाकृतियां हैं जिनमें दीक्षित, विधादेवियां, यक्ष, शब्दांजियों और अन्य सजावटी शिल्पांकन शामिल हैं, जो खजुराहो और कोणार्क के मंदिरों की तुलना में दिखते हैं।[7,8]

श्री महावीर स्वामी मंदिर

महावीर स्वामी जैन धर्म 24वें तीर्थंकर थे। यह मन्दिर 1582 में बनी एक छोटी सी संरचना है जो भगवान महावीर को समर्पित है। छोटा होने के कारण यह दीवारों पर नक्काशी से युक्त एक अद्भुत मंदिर है। इस मन्दिर के ऊपरी दीवारों पर चित्र सिरोही के कलाकारों द्वारा 1764 में चित्रित किया गये हैं।

हर साल धार्मिक महत्व की इस तीर्थ-यात्रा पर हजारों की संख्या में भक्त आते हैं। यह प्राचीन मंदिर अपने आकर्षक आकर्षण से पर्यटकों को भी आकर्षित करता है। ऐसा माना जाता है कि जो कारीगर संगमरमर का काम पूरा करते थे उन्हें एकत्र किए गए धूल के अनुसार भुगतान किया जाता था जिससे वे और अधिक परिष्कृत डिजाइन तैयार करते थे।

उत्कृष्ट रूप से उत्कीर्णित इन मंदिरों को राजस्थान के सर्वाधिक लोकप्रिय आकर्षणों में से एक माना जाता है। इन मंदिरों की असाधारण शिल्पकारिता और वास्तुकला की समान रूप से सराहना की जाती है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

अतिशय क्षेत्र लूनवा जयपुर से 70 किमी दूर स्थित एक प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल है । लूणवा भारत के राजस्थान के नागौर जिले का एक छोटा सा गाँव है । मंदिर, लुनवा में दो जैन मंदिरों में से एक, 1672 में स्थापित किया गया था ।[9,10]

अतिशय क्षेत्र के आसपास दबी हुई मूर्तियां ईसा पूर्व छठी शताब्दी की मानी जाती हैं। [1]

लुनवा में मंदिर

लुनवा में दो जैन मंदिर हैं; दोनों का ऐतिहासिक महत्व है और चमत्कार के लिए प्रसिद्ध हैं । भक्त मंदिरों में मन्नतें मांगते हैं और उनका मानना है कि वे पूरी होंगी।

- खंडेलवाल दिगंबर जैन मंदिर : इस मंदिर में भगवान आदिनाथ की मुख्य मूर्ति है [2] जो जैन धर्म के पहले तीर्थंकर हैं। यह मंदिर 400 वर्ष से अधिक पुराना है और इसका इतिहास विक्रम संवत 1672 का है। तब जैन धर्म के आठवें तीर्थंकर भगवान चंद्र प्रभु की मूर्ति नारायणा की सीमा पर निर्माण के दौरान मिली थी।, राजस्थान का एक गाँव। दोनों राजतंत्रों में इस बात पर विवाद था कि मूर्ति का नियंत्रण किसे लेना चाहिए। अंततः यह निर्णय लिया गया कि मूर्ति को एक बैल द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी में रखकर छोड़ दिया जाएगा और जिस गाँव में बैल रुकेगा वह सामूहिक रूप से उसका मालिक बन जाएगा। आदिनाथ जैन मंदिर लूणवा में रुकने से पहले बैल लगभग 45 किमी तक दौड़ा। पास के नारायणा गांव के निवासियों ने गाड़ी का पता लगाया और मूर्ति को लूनवा के जैनियों को आदिनाथ जैन मंदिर में रखने के लिए सौंप दिया, जो बाद में खंडेलवाल दिगंबर जैन मंदिर बन गया ।
- दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र नसिया जी : श्री 1008 नेमिनाथ स्वामी मंदिर, जिसे नसिया जी के नाम से भी जाना जाता है, लूनवा बस स्टैंड के पास स्थित मंदिर है। यह मंदिर लूनवा गांव में एक और चमत्कार है। लगभग 75 साल पहले, एक किसान कुआँ खोद रहा था जब उसे भगवान श्री चंद्र प्रभु और भगवान श्री शांतिनाथ की मूर्ति मिली। मूर्ति को उचित अनुष्ठानों के साथ नेमिनाथ स्वामी मंदिर में स्थापित किया गया।

हाल की घटनाएँ

खंडेलवाल दिगंबर जैन मंदिर, लुनवा का जीर्णोद्धार चल रहा है। अप्रैल 2016 में, पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव होगा, जिसमें आचार्य श्री इंद्रानंद जी महाराज समारोहों को आशीर्वाद देंगे और भोपाल से महेश पंडित अनुष्ठानों का मार्गदर्शन करेंगे।[10,11]

विचार-विमर्श

ऋषभदेव उदयपुर से 65 किलोमीटर (40 मील) दूर स्थित है, और उदयपुर-अहमदाबाद सड़क मार्ग (राष्ट्रिय राजमार्ग 48 (पूर्व नाम 8)) पर है। शहर का नाम ऋषभदेव जी हैं, यह एक प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल है। मुख्य आकर्षण ऋषभदेव मंदिर है, जो प्रथम जैन तीर्थंकर का विशाल मंदिर है, प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जी को हिंदू विष्णु का आठवां अवतार भी कहते हैं ऐसी उनकी मान्यता है स्थानीय भील भी इनकी पूजा करते हैं। नगर का अन्य नाम केसरियाजी भी हैं क्योंकि मंदिर में केसर से पूजा की जाती हैं। इस मंदिर को मेवाड़ के चार मुख्य धार्मिक संस्थाओं में एक माना जाता हैं। उदयपुर के चतुर सिंह जी के अनुसार:[3]

> एकलिंग गिरिराजधर ऋषभदेव भुजचार
> सदा स्नेह तो, चार धाम मेवाड़

ऋषभदेव हरे रंग के संगमरमर (ग्रीन मार्बल) के लिए भी प्रसिद्ध है। मसारो की ओबरी, ओडावास एवं कागदर में ३०० से अधिक खाने हैं, दुनिया भर के 90% प्रतिशत हरे रंग के संगमरमर उत्पादित किया जाता हैं। लगभग 70% प्रतिशत की हरे संगमरमर का निर्यात अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, कनाडा और कई अन्य देशों में किया जाता है।[11]

अभी उच्च शिक्षा (एमबीबीएस, बीटेक, बी कॉम, सी. ए. और कई पाठ्यक्रम) के लिए कई छात्र बाहर जा रहे हैं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

जनसांख्यिकी

भारत की जनगणना २००१ के अनुसार नगर की जनसंख्या 8023 थी। पुरुष जनसंख्या 52%, और महिलाओं की 48%. नगर की औसत साक्षरता दर 76%, जो राष्ट्रीय औसत 59.5% की तुलना में अधिक है। पुरुष साक्षरता 82% है, और महिला साक्षरता 70% है। नगर में, 14% जनसंख्या 6 वर्ष से कम उम्र की हैं।[4]

शहर के आधे निवासी जैन हैं, जिसमे 95% दिगंबर है, अन्य ब्राह्मण, सुथार, लोहार, दर्जी, मोची, कुम्हार,भोई, कलाल, पटेल, सोमपुरा, वाल्मीकि आदि हैं। श्वेतांबर जैन भी यहां रहने वाले है। मंदिर के आसपास श्वेतांबर जैन और दिगंबर जैन, कई भील और मीणा आसपास के गांवों में रहते हैं, और प्रार्थना के लिए नित्य आते हैं।

मुख्य मंदिर

मुख्य मंदिर में भगवान ऋषभदेव की काले पत्थर से खुदी पद्मासन मुद्रा में 3.5 फीट (1.1 मी) ऊँची मूर्ति है।[10]

भट्टारक दिगंबर जैन मंदिर

मुख्य मंदिर के पास ही दिगंबर जैन भट्टारक मंदिर विराजमान है।

गुरुकुल दिगंबर जैन मंदिर

यह विशाल दिगंबर जैन मंदिर है जहां तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की विशाल मूर्ति पद्मासन अवस्था में विराजमान है।

कांच का दिगंबर जैन मंदिर

यह दिगंबर जैन मंदिर है जिसमें कांच की नक्काशी की गई है।

महावीर दिगंबर जैन मंदिर

यह एक दिगंबर जैन मंदिर है।

गज मंदिर

गजमंदिर एक जैन श्वेतांबर मंदिर, जिसका निर्माण 2011 में किया गया, जो कीका भाई धर्मशाला के रूप में अच्छी तरह से जाना जाता है। जहां तीर्थ यात्रियों के लिए ठहरने की उत्तम व्यवस्था है

अन्य स्थानीय आकर्षण

आस-पास के स्थानों में प्रसिद्ध: पगल्याजी, ऋषभ उद्यान, जैन मंदिर, राम मंदिर, इमलिया हनुमान जी, चंद्रगिरी, भीम पगल्या भवन, दादाबाड़ी, पीपली मंदिर।

राजस्थान राज्य के पाली जिले में अरावली पर्वत की घाटियों के मध्य स्थित रणकपुर में ऋषभदेव का चतुर्मुखी जैन मंदिर है। चारों ओर जंगलों से घिरे इस मंदिर की भव्यता देखते ही बनती है।

राजस्थान में अनेकों प्रसिद्ध भव्य स्मारक तथा भवन हैं। इनमें माउंट आबू तथा दिलवाड़ा के विख्यात जैन मंदिर भी शामिल हैं। रणकपुर मंदिर उदयपुर से 96 किलोमीटर की दूरी पर है। भारत के जैन मंदिरों में संभवतः इसकी इमारत सबसे भव्य तथा विशाल है।[11]

मंदिर इमारत

यह परिसर लगभग ४०,००० वर्ग फीट में फैला है। करीब ६०० वर्ष पूर्व १४४६ विक्रम संवत में इस मंदिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ था जो ५० वर्षों से अधिक समय तक चला। इसके निर्माण में करीब ९९ लाख रुपए का खर्च आया था। मंदिर में चार कलात्मक प्रवेश द्वार हैं। मंदिर के मुख्य गृह में तीर्थंकर आदिनाथ की संगमरमर से बनी चार विशाल मूर्तियाँ हैं। करीब ७२ इंच

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

ऊँची ये मूतियाँ चार अलग दिशाओं की ओर उन्मुख हैं। इसी कारण इसे चतुर्मुख मंदिर कहा जाता है। इसके अलावा मंदिर में ७६ छोटे गुम्बदनुमा पवित्र स्थान, चार बड़े प्रार्थना कक्ष तथा चार बड़े पूजन स्थल हैं। ये मनुष्य को जीवन-मृत्यु की 84 लाख जीवयोनियों से मुक्ति प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।

मंदिर के सैकड़ों खम्बे इसकी प्रमुख विशेषता हैं। इनकी संख्या करीब १४४४ है। जिस तरफ भी दृष्टि जाती है छोटे-बड़े आकारों के खम्भे दिखाई देते हैं, परंतु ये खम्भे इस प्रकार बनाए गए हैं कि कहीं से भी देखने पर मुख्य पवित्र स्थल के 'दर्शन' में बाधा नहीं पहुँचती है। इन खम्भों पर सुंदर नक्काशी की गई है।

मंदिर की छतपर की गई उत्कृष्ट नक्काशी

मंदिर के निर्माताओं ने जहाँ कलात्मक दो मंजिला भवन का निर्माण किया है, वहीं भविष्य में किसी संकट का अनुमान लगाते हुए कई तहखाने भी बनाए हैं। इन तहखानों में पवित्र मूर्तियों को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये तहखाने मंदिर के निर्माताओं की निर्माण संबंधी दूरदर्शिता का परिचय देते हैं। मंदिर के उत्तर में रायन पेड़ स्थित है। इसके अलावा संगमरमर के टुकड़े पर भगवान ऋषभदेव के पदचिह्न भी हैं। ये भगवान ऋषभदेव तथा शत्रुंजय की शिक्षाओं की याद दिलाते हैं।[8,9]

परिणाम

ज्ञानोदय तीर्थ, नारेली जैन मंदिर, अजमेर के बाहरी इलाके में स्थित एक नवनिर्मित जैन मन्दिर है। शहर के केंद्र से 7 किलोमीटर की दूरी पर और जयपुर से 128 किलोमीटर पश्चिम की ओर मुख्य राष्ट्रीय राजमार्ग 8 पर स्थित है।

निष्कर्ष

नाकोड़ा – पार्श्वनाथ मंदिर (बालोतरा खींचन)
जोधपुर से बाड़मेर जाने वाले रेल मार्ग पर बालोतरा जंक्शन से 10 किलोमीटर दूर नाकोडा पार्श्वनाथ मंदिर नाकोडा भेरुजी के चमत्कारों से युक्त श्रद्धालु भक्तों का मुख्य केंद्र है। यहां पर मुख्य मंदिर मैं भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा 23 फीट ऊंची तथा काले पत्थर से बनी हुई है।नाकोड़ा पार्श्वनाथ मंदिर में देव नाकोड़ा भैरव की स्थापना की गई है जो जागृत देवता के रूप में जाने जाते हैं।

श्री महावीरजी
दिल्ली-मुंबई रेलमार्ग पर हिंडौन सिटी एवं गंगापुर सिटी स्टेशनों के बीच गंभीर नदी के किनारे भगवान श्री महावीर का मंदिर बना हुआ है।

यहां मंदिर करौली जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर है तथा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 से महुआ होकर हिंडौन के रास्ते श्री महावीर जी तक पहुंचा जा सकता है। यात्रियों की सुविधा के लिए यहां धर्मशालाएं अन्नपूर्णा भोजनालय तथा रेलवे स्टेशन से लाने ले जाने हेतु बस यहां स्थित ट्रस्ट द्वारा संचालित की जाती हैं। ट्रस्ट द्वारा यहां ग्रन्थालय, चिकित्सालय, महिला महाविद्यालय, विद्यालय और कई अन्य मंदिर बनाए गए हैं।[7,8]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

श्री महावीरजी का मेला
यहां चैत्र नवरात्रि की समाप्ति पर केला देवी के मेले से पूर्व में 1 सप्ताह का महावीर जी का मेला लगता है। जिसमें हजारों संख्या में जैन धर्म के भक्त देश के कोने-कोने से पहुंचते हैं।इस मेले में भगवान महावीर की मूर्ति को रथ में रखकर स्थानीय और क्षेत्रीय मीणा, गुर्जर जाति के लोग एवं जैन लोग मिलकर खींचते हैं।

गंभीर नदी के दूसरे किनारे पर नया भगवान पार्श्वनाथ का एक भव्य मंदिर बनाया गया है जो कलात्मक दृष्टि से आकर्षण का केंद्र है। इसी प्रकार शहर में एक कांच का भगवान ऋषभदेव का मंदिर भी आकर्षण का केंद्र है।

राजस्थान , पश्चिमी भारत का एक राज्य, का जैन धर्म से घनिष्ठ ऐतिहासिक संबंध रहा है । दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान श्वेतांबर जैन धर्म का मुख्य केंद्र था । प्रमुख दिगंबर केंद्र राजस्थान के उत्तरी और पूर्वी हिस्सों में हैं। मध्य और उत्तरी राजस्थान श्वेतांबर जैन धर्म के तेरापंथ संप्रदाय के प्रमुख केंद्र हैं। [10,11]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1) डॉ॰ जगदीश चन्द्र जैन, राजस्थान के कस्बों का इतिहास।
2) तोड्, जेम्स & क्रूक, विलियम। 1829. Annals & Antiquities of Rajasthan or the Central and Western Rajput States of India. भाग ३. पुनर्छपाई: लॉ प्राइस पब्लिकेशन, दिल्ली 1990 ISBN 81-85395-68-3 (३ भागों में)
3) Helmuth von Glasenapp,Shridhar B. Shrotri. 1999. Jainism: an Indian religion of salvation. P.15 "Jainas consider that religion is eternal and imperishable. It is without beginning and it will never cease to exist. The darkness of error enveloping the truth in certain, periodically occurring aeons clears up again and again so that the brightness of the Jaina-faith can sparkle again anew."
4) ↑ Dundas, Paul. 2002. The Jains. P.12 "Jainism is believed by its followers to be everlasting, without beginning or end..."
5) ↑ Varni, Jinendra; Ed. Prof. Sagarmal Jain, Translated Justice T.K. Tukol and Dr. Narendra Bhandari. Samaṇ Suttaṁ. नई दिल्ली: Bhagwan Mahavir memorial Samiti. "The Historians have so far fully recognized the truth that Tirthankara Mahavira was not the founder of the religion. He was preceded by many tirthankaras. He merely reiterated and rejuvenated that religion. It is correct that history has not been able to trace the origin of the Jaina religion; but historical evidence now available and the result of dispassionate researches in literature have established that Jainism is undoubtedly an ancient religion." Pp. xii – xiii of introduction by Justice T.K.Tutkol and Dr. K.K. Dixit.
6) ↑ Helmuth von Glasenapp,Shridhar B. Shrotri. 1999. Jainism: an Indian religion of salvation. P.24. "Thus not only nothing, from the philosophical and the historical point of view, comes in the way of the supposition that Jainism was established by Parsva around 800 BC, but it is rather confirmed in everything that we know of the spiritual life of that period."
7) ↑ Dundas, Paul. 2002. The Jains. P.17. "Jainism, then, was in origin merely one component of a north Indian ascetic culture that flourished in the Ganges basin from around the eighth or seventh centuries BC."
8) ↑ Larson, Gerald James (1995) India's Agony over religion SUNY Press ISBN 0-7914-2412-X. "There is some evidence that Jain traditions may be even older than the Buddhist traditions, possibly going back to the time of the Indus valley civilization, and that Vardhamana rather than being a "founder" per se was, rather, simply a primary spokesman for much older tradition. Page 27"
9) ↑ Joel Diederik Beversluis (2000) In: Sourcebook of the World's Religions: An Interfaith Guide to Religion and Spirituality, New World Library : Novato, CA ISBN 1-57731-121-3 Originating on the

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

Indian sub-continent, Jainism is one of the oldest religion of its homeland and indeed the world, having pre-historic origins before 3000 BC and the propagation of Indo-Aryan culture.... p. 81

10) ↑ Jainism by Mrs. N.R. Guseva p.44

11) ↑ Long, Jeffrey D. (2009). Jainism: An Introduction. New York: I.B. Tauris. पपृ॰ 45–56. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1-84511-626-2.

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com